⟹ पर्यावरण भूगोल की आधारभूत संकल्पनाएं

पर्यावरण भूगोल के अध्ययन की आधारभूत इकाई वायुमण्डलीय, स्थलमण्डलीय एवं जलमण्डलीय संघटकों से युक्त जीवन-पोषी परत है। इसी परत को जीवमण्डल भी कहा जाता है, जो सभी प्रकार के जीवन को सम्भव बनाता है। पर्यावरण के विभिन्न संघटकों में अंतर्क्रिया के फलस्वरूप विभिन्न प्रकार के धनात्मक एवं ऋणात्मक परिणाम उत्पन्न होते हैं। पर्यावरण पर आर्थिक एवं प्रौद्योगिक मानव के अनवरत बढ़ते दबाव के कारण पर्यावरण अवनयन एवं प्रदूषण का आविर्भाव होता है।

पर्यावरण भूगोल के निम्नलिखित प्रमुख आधारभूत नियम एवं संकल्पनाएं हैं—

1. पर्यावरण जीवमण्डल हेतु जीवन-पोषी परत के रूप में है। जहां पर्यावरण के जैविक और अजैविक घटक आपस में ऊर्जा संचारण अंतर्सम्बन्धित होते हैं। जिसके द्वारा जीवमण्डलीय पारिस्थितिक तंत्र की एकता कायम रहती है।
2. गतिक उद्भवशील पृथ्वी कई चक्र समूहों में कार्य करती है। जिससे आंतरिक तथा बाह्य बल उत्पन्न होता है और भूतल पर विभिन्न प्रकार के स्थलरूपों का निर्माण होता है। इन्हीं स्थलीय धरातल पर विभिन्न जीवों का आवास होता है। स्थलाकृति पर लगने वाले बलों से धरातल के स्वरूप में परिवर्तन होता रहता जिससे प्राणियों के आवास भी बदलते हैं। ज्वालामुखी भूकम्प, द्वारा विनाशकारी दृश्य देखने को मिलता है। वहीं बाह्य बल द्वारा उत्पन्न समस्याएं यथा - बाढ़, सूखा, हिमानी जलीय प्रक्रम, सायक्लि तरंगे आदि भी धरातलीय आवास में परिवर्तन होते हैं।

इस प्रकार अंतर्जात तथा बहिर्जात प्रक्रमों के मध्य अन्तर्प्रक्रियाओं द्वारा स्थलाकृतियों का वर्तमान रूप में विकास होता है।

3- विभिन्न भौतिक, रासायनिक एवं जीवीय प्रक्रम भूतल के पदार्थों के सृजन, अनुरक्षण एवं विनाश में सतत कार्यरत हैं।

4. भूतल पर जीवन पोषण के लिए जीवीय समुदाय ने वायु, जल तथा मृदा में रासायनिक तत्वों या पोषक तत्वों के चक्रण को सदा से परिवर्तित एवं प्रभावित किया है। प्रौद्योगिक कौशल में अनवरत वृद्धि ने संसाधनों का दोहन व्यापक स्तर पर हुआ है, जिससे पर्यावरणीय अवनयन एवं प्रदूषण की स्थिति उत्पन्न हुई है। साथ ही संसाधनों के दोहन से भविष्य में उनकी उपस्थिति को लेकर संकट उत्पन्न हो गया है।

5. भौतिक प्रक्रम एवं जीवीय प्रक्रम एकरूपतावाद के नियम के अनुसार कार्य करते हैं। जो दो बातों पर प्रकाश डालता है। (i) वर्तमान भूत की कुंजी है। (ii) न तो आदि का कोई लक्षण है और न ही अंत के कोई आसार हैं।" यह नियम पृथ्वी के इतिहास के वैज्ञानिक स्वरूप से सम्बन्धित है।

एकरूपतावाद का यह नियम इस प्रकार है-

"वे सभी भौतिक नियम तथा प्रक्रम जो आज कार्यरत हैं, समस्त भूगर्भिक समय के दौरान कार्यरत थे, यद्यपि उनकी तीव्रता आवश्यक रूप से सदा समान नहीं रही है।"

6. भौतिक एवं जीवीय प्रक्रम इस तरह कार्य करते हैं कि किसी निश्चित क्षेत्र में निश्चित काल अवधि में यदि कोई परिवर्तन होता है तो प्राकृतिक दशा में उस परिवर्तन की समुचित क्षतिपूर्ति हो जाती है।

ज्ञातव्य है कि आकस्मिक एवं प्रलयंकारी प्राकृतिक घटनाओं यथा - विध्वंशक ज्वालामुखी तथा उससे निस्सृत लावा, व्यापक विश्व स्तरीय जलवायु परिवर्तन आदि द्वारा जातियों का विलोपन होता रहा है और भविष्य में भी होता रहेगा।

7- पर्यावरण के जैविक एवं अजैविक संघटकों में पारस्परिक सम्बन्ध होते हैं। औद्योगिक क्रांति के साथ ही मनुष्य सर्वाधिक महत्वपूर्ण पर्यावरणीय प्रक्रम के रूप में उभर कर सामने आया है। प्रौद्योगिकी से युक्त आर्थिक मानव पर्यावरण को किसी भी सीमा तक परिवर्तित करने में समर्थ हो चला है। इन परिवर्तनों द्वारा सम्पूर्ण पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों पर विशेष ध्यान देना होगा।

8. पारिस्थितिक तंत्र एक कार्यशील, सुसंगठित एवं संरचित इकाई होता है, जिसकी रचना जैविक एवं अजैविक अथवा भौतिक संघटकों से हुई है। पारिस्थितिक तंत्र में ऊर्जा का सर्वप्रमुख स्रोत सौर्यिक विकिरण है जिसे स्वपोषित हरे पौधे प्रकाश संश्लेषण द्वारा ग्रहण कर अपनी वृद्धि करते हैं। पौधों की ऊर्जा प्राथमिक उपभोक्ताओं द्वारा भोजन के रूप में प्राप्त होती है उसी प्रकार द्वितीय, तृतीयक एवं चतुर्थ स्तर के

पोषण वर्ग मे ऊर्जा का स्थाना-तरण होता रहता है। अंततः अपघटक द्वारा मृजैव रासायन चक्र द्वारा पुनः चक्रण कर दिया जाता है।

इसी ऊर्जा के प्रवाह द्वारा ही सम्पूर्ण जैव जगत का जीवन सम्भव हो सका है।

(9)- जाति मे कालिक तथा स्थानीय परिवर्तन होते रहते हैं। सभी जातियो मे प्राकृतिक चयन और पर्यावरण के अनुकूलन की व्यवस्था बनी रहती है। जो उनके जीवन का आधार है। डार्विन के जातियो के उद्भव एवं विकास को प्रगामी उद्भव सिद्धांत कहते हैं। इस सिद्धांत के अनुसार जातियो मे वंश वृद्धि की प्रक्रिया स्वतः चलती रहती है जिस कारण उस प्राणी का अस्तित्व बना रहता है।

(10) विभिन्न जीवधारियो के प्रादेशिक तथा विश्व स्तर पर स्थानिक तथा कालिक वितरण का आकलन कर मनुष्य अपनी सुविधानुसार चयन कर सकता है। मनुष्य हानिप्रद जातियो का अलगाव कर सकता है। उन्हे पालतू नही बनायेगा। विकासशील एवं अविकसित देशों मे अन्य स्रोतो से विदेशी पौधो तथा जन्तुओं को लाने तथा उनकी अत्यधिक तेज गुणन से वृद्धि के कारण अनेक समस्याएं उत्पन्न हो गयी हैं।

(11) पर्यावरण एवं जीवित जीवों मे पारस्परिक सम्बन्ध होता है। अर्थात विभिन्न जीव धारियो के लिए प्राकृतिक पर्यावरण विभिन्न प्रकार का निवास्य स्थान प्रदान करता है। भौतिक पर्यावरण एवं जीवो मे इस तरह के पारस्परिक सम्बन्धो के कारण प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्र अत्यधिक दक्ष हो जाते हैं।

———— × ————

Dr. Manoj Kr. Pandey